

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **AUGUST 21, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं का कालक्रमानुसार क्रम

प्रश्न: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की निम्नलिखित घटनाओं पर विचार करें:

1. खेड़ा सत्याग्रह
2. अहमदाबाद मिल मजदूर हड़ताल
3. चंपारण सत्याग्रह

निम्नलिखित में से कौन सा घटनाओं के **कालक्रमानुसार क्रम** को सही ढंग से दर्शाता है?

- (a) 1-2-3
- (b) 3-2-1
- (c) 2-3-1
- (d) 3-1-2

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (b)

घटना	समय
चंपारण सत्याग्रह (3)	अप्रैल 1917
अहमदाबाद मिल हड़ताल (2)	फरवरी-मार्च 1918
खेड़ा सत्याग्रह (1)	मार्च 1918 से आगे

इस प्रकार, सही क्रम है: चंपारण (3) → अहमदाबाद (2) → खेड़ा (1)।

→ विकल्प (b) सही है।

2. गहरे समुद्र के जीवों की धीमी उपापचयी दर (Metabolic Rate)

प्रश्न: निम्नलिखित में से कौन सा सर्वोत्तम रूप से यह बताता है कि गहरे समुद्र के जलीय जीव कुछ समुद्री क्षेत्रों में घुली हुई ऑक्सीजन की उपलब्धता के बावजूद अक्सर **अत्यंत धीमी उपापचयी दरें** क्यों प्रदर्शित करते हैं?

- (a) उच्च द्रवस्थैतिक दबाव (high hydrostatic pressure) तीव्र जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं के लिए आवश्यक एंजाइम लचीलेपन को कम कर देता है।
- (b) सूर्य के प्रकाश की अनुपस्थिति माइटोकॉन्ड्रिया के अंदर ATP-उत्पादक मार्गों को रासायनिक रूप से निष्क्रिय कर देती है।

(c) खनिज लवणों की उच्च सांद्रता परासरण संतुलन (osmotic balance) को रोकती है, जिससे कोशिकीय श्वसन धीमा हो जाता है।

(d) गहराई में कम CO_2 घुलनशीलता चयापचय के लिए आवश्यक कार्बनिक अणुओं के निर्माण को प्रतिबंधित करती है।

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (a)

गहरे समुद्र में, **अत्यधिक दबाव** जैविक अणुओं को संपीड़ित करता है। यह संपीड़न **एंजाइमों** की गतिशीलता को कम करता है और उनकी संरचना को प्रभावित करता है, जिससे जैव रासायनिक प्रतिक्रिया दरें और सामान्यतः उपापचयी दरें धीमी हो जाती हैं। यह उच्च दबाव अनुकूलन गहरे समुद्र के जीवों के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है।

- **विकल्प (b) और (c) गलत हैं:** माइटोकॉन्ड्रिया को कार्य करने के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है, और गहरे समुद्र के जीव परासरण संतुलन बनाए रखते हैं।
- **विकल्प (d) गलत है:** गहराई के साथ CO_2 घुलनशीलता वास्तव में कम नहीं होती है, बल्कि दबाव बढ़ने के कारण बढ़ जाती है।

→ विकल्प (a) सही है।

3. वित्तीय व्युत्पन्न (Financial Derivatives)

प्रश्न: वित्तीय व्युत्पन्न (Financial Derivatives) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एक **यूरोपीय कॉल विकल्प (European call option)** का उपयोग समाप्ति तिथि से पहले या उस पर किसी भी समय किया जा सकता है।
2. **वायदा अनुबंध (futures contract)** में, दोनों पक्ष सहमत भविष्य की तारीख पर अनुबंध करने के लिए **बाध्य** होते हैं।
3. एक विकल्प के लिए भुगतान किया गया **प्रीमियम** आमतौर पर वायदा अनुबंध के लिए आवश्यक **मार्जिन** से कम होता है।

उपरोक्त में से कितने कथन **सही** हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (b)

- **कथन 1 – गलत:**
 - **यूरोपीय विकल्प** का उपयोग केवल **समाप्ति तिथि पर** ही किया जा सकता है।
 - **अमेरिकी विकल्प (American Option)** का उपयोग समाप्ति तिथि से पहले **किसी भी समय** किया जा सकता है।

- **कथन 2 – सही:** वायदा अनुबंध (Futures) खरीदार और विक्रेता दोनों पर भविष्य की तारीख में सहमत कीमत पर लेन-देन करने का **परस्पर दायित्व** लगाते हैं।
- **कथन 3 – सही:** विकल्प के लिए केवल एक **प्रीमियम** (एक अग्रिम लागत) की आवश्यकता होती है। वायदा अनुबंध के लिए **उच्च मार्जिन** की आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें दोनों पक्षों पर दायित्व होता है।

इस प्रकार, **दो** कथन (2 और 3) सही हैं → (b)।

4. राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत (DPSP)

प्रश्न: राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों (DPSP) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. संविधान राज्य को नागरिकों के लिए **समान नागरिक संहिता (Uniform Civil Code)** सुरक्षित करने का निर्देश देता है।
2. **ग्राम पंचायतों का संगठन** समाजवादी सिद्धांतों के तहत शामिल है।
3. व्यक्तिगत या सहकारी आधार पर **कुटीर उद्योगों** को बढ़ावा देना एक **गांधीवादी सिद्धांत** है।
4. **न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करना** उदार-बौद्धिक सिद्धांतों से संबंधित है।

उपरोक्त में से कितने कथन **सही** हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (c)

DPSP को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है: समाजवादी, गांधीवादी, और उदार-बौद्धिक।

- **कथन 1 – सही:** अनुच्छेद 44 नागरिकों के लिए UCC सुरक्षित करने का निर्देश देता है, जो **उदार-बौद्धिक सिद्धांतों** के तहत आता है।
- **कथन 2 – गलत:** ग्राम पंचायतों का संगठन (**अनुच्छेद 40**) **गांधीवादी सिद्धांत** है।
- **कथन 3 – सही:** कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना (**अनुच्छेद 43**) **गांधीवादी सिद्धांत** है।
- **कथन 4 – सही:** न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करना (**अनुच्छेद 50**) **उदार-बौद्धिक सिद्धांतों** के अंतर्गत आता है।

अतः, **तीन** कथन (1, 3 और 4) सही हैं → (c)।

5. अभिकथन-कारण प्रकार - पुनर्योजी DNA तकनीक (Recombinant DNA Technology)

प्रश्न: अभिकथन - कारण प्रकार -

अभिकथन (A): पुनर्योजी DNA तकनीक मेजबान जीवों में विदेशी DNA के प्रविष्टि की अनुमति देती है, जिससे वे नए लक्षण व्यक्त करने में सक्षम होते हैं।

कारण (R1): प्रतिबंधन एंडोन्यूक्लिएज (Restriction endonucleases) DNA को विशिष्ट पहचान स्थलों पर काटते हैं, जिससे पुनर्संयोजन के लिए उपयुक्त चिपचिपे या कुंद सिरे (sticky or blunt ends) उत्पन्न होते हैं।

कारण (R2): DNA लाइगेज केवल उन्हीं DNA खंडों को जोड़ सकता है जो एक ही जीव से उत्पन्न होते हैं।

(a) A सत्य है, और R1 तथा R2 दोनों सत्य हैं, और R1, A का सही स्पष्टीकरण है।

(b) A सत्य है, R1 सत्य है, R2 असत्य है, और R1, A का सही स्पष्टीकरण है।

(c) A और R1 सत्य हैं, R2 असत्य है, लेकिन R1, A का स्पष्टीकरण नहीं है।

(d) A असत्य है, लेकिन R1 और R2 सत्य हैं।

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (b)

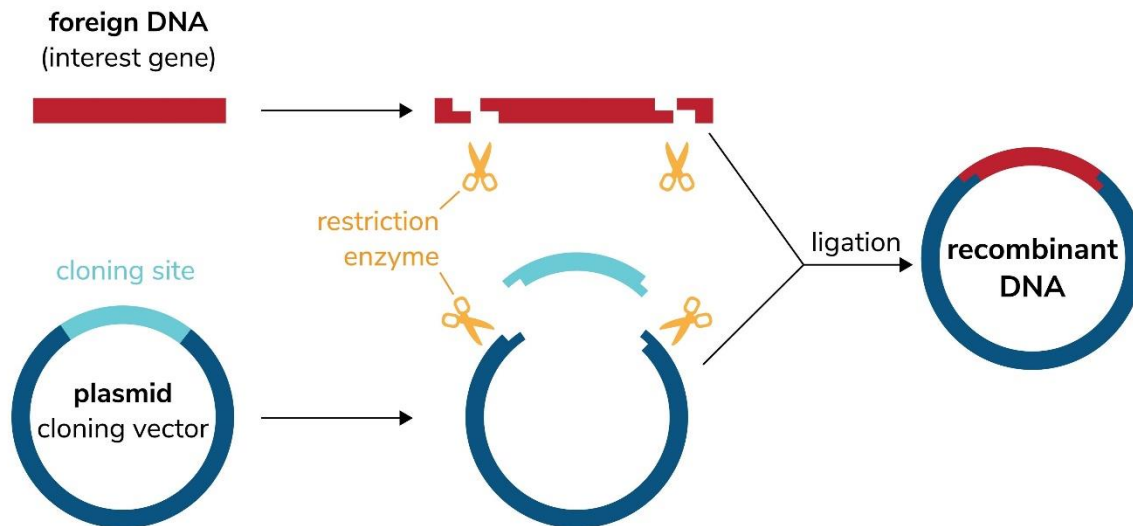
- **अभिकथन (A) – सत्य:** पुनर्योजी DNA तकनीक में एक विदेशी जीन को एक वाहक (वेक्टर) में जोड़कर मेजबान जीनोम में प्रवेश कराया जाता है, जिससे जीव में नए आनुवंशिक गुण आते हैं।
- **कारण (R1) – सत्य:** प्रतिबंधन एंजाइमों का उपयोग DNA को विशिष्ट और सटीक स्थानों पर काटने के लिए किया जाता है, जिससे संगत सिरे (चिपचिपे सिरे) बनते हैं। ये सिरे विदेशी DNA और वाहक DNA को जोड़ने की प्रक्रिया को सक्षम करते हैं।
- **कारण (R2) – असत्य:** DNA लाइगेज किसी भी संगत DNA खंडों को जोड़ता है, भले ही वे अलग-अलग प्रजातियों (जैसे, मानव DNA और जीवाणु प्लास्मिड) से उत्पन्न हुए हों। यह पुनर्संयोजन DNA तकनीक का आधार है।

चूँकि R1 पुनर्संयोजन प्रक्रिया को सक्षम करने वाले मुख्य उपकरण (प्रतिबंधन एंजाइम) का वर्णन करता है, यह अभिकथन की प्रक्रिया को सही ढंग से समझाता है।

→ विकल्प (b) सही है।

MICROBIOLOGY ●●●

Recombinant DNA



दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

1. रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर राष्ट्रीय कार्य योजना 2.0 (NAP-AMR 2.0)

प्रश्न: 2024 में भारत द्वारा शुरू की गई रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर राष्ट्रीय कार्य योजना 2.0 (NAP-AMR 2.0) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह योजना "वन हेल्थ" दृष्टिकोण को एकीकृत करती है, जिसमें रोगाणुरोधी प्रबंधन केवल मानव स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए अनिवार्य किया गया है और पशुपालन क्षेत्र को स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है।
2. यह योजना राज्यों को भारत के AMR रोकथाम पर राष्ट्रीय कार्यक्रम (NP-AMR) के अनुरूप राज्य-स्तरीय AMR निगरानी नोड्स स्थापित करने का आदेश देती है और सभी राज्यों को डेटा को एक एकीकृत राष्ट्रीय डिजिटल डैशबोर्ड में एकीकृत करने की आवश्यकता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) दोनों सही हैं
- (d) दोनों गलत हैं

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (b)

- **कथन 1 – गलत:** NAP-AMR 2.0 एक पूर्ण "वन हेल्थ" दृष्टिकोण का अनुसरण करता है, जिसमें मानव, पशु, खाद्य और पर्यावरण सभी शामिल हैं। रोगाणुरोधी प्रबंधन (stewardship) केवल मानव स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि पशु चिकित्सा और कृषि क्षेत्रों को भी शामिल करता है।
- **कथन 2 – सही:** NAP-AMR 2.0 राज्यों को राज्य AMR निगरानी इकाइयाँ (S-ASUs) स्थापित करने का आदेश देता है जो NP-AMR के साथ संरेखित हैं और डेटा को राष्ट्रीय स्तर पर निगरानी के लिए एक डिजिटल डैशबोर्ड में एकीकृत करने की आवश्यकता है।

→ केवल 2 सही है।

2. "द मेरठ बुगले" (The Meerut Bugle)

प्रश्न: हाल ही में खबरों में रहा "द मेरठ बुगले" (The Meerut Bugle) निम्नलिखित में से किस डोमेन से संबंधित है?

- (a) 1857 के विद्रोह के शुरुआती संकेतों का दस्तावेजीकरण करने वाली एक नई अवर्गीकृत सैन्य घटना
- (b) रक्षा उपग्रह प्रणालियों के लिए एक क्रिप्टोग्राफिक संचार प्रोटोकॉल
- (c) ऊपरी गंगा बेसिन में तैनात एक पर्यावरणीय प्रारंभिक चेतावनी उपकरण
- (d) पश्चिमी हिमालय में खोजी गई एक नई स्थलीय कीट प्रजाति

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (a)

"द मेरठ बुगले" हाल ही में अवर्गीकृत किया गया एक सैन्य ऐतिहासिक दस्तावेज है जो मेरठ छावनी (Meerut Cantonment) से प्राप्त हुआ है। यह दस्तावेज 1857 के विद्रोह के शुरुआती संकेतों और खुफिया जानकारी पर प्रकाश डालता है, जो उस समय के ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों को मिली थी। इसका रक्षा, पारिस्थितिकी, या कीट वर्गीकरण से कोई संबंध नहीं है।

→ विकल्प (a) सही है।

3. BIRSA-101 जीन थेरेपी

प्रश्न: BIRSA-101 जीन थेरेपी के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह थेरेपी क्रिसपर-कैस9 (CRISPR-Cas9) संपादन का उपयोग एक दुर्लभ प्रकार के जन्मजात मायोपैथी (congenital myopathy) के लिए जिम्मेदार माइटोकॉण्ड्रियल उत्परिवर्तन को ठीक करने के लिए करती है।
2. BIRSA-101 को अल्ट्रा-दुर्लभ रोगों के लिए नामित भारत के "त्वरित जीनोमिक थेरेपी अनुमोदन ढांचा" के तहत नियामक मंजूरी मिली।
3. यह प्रत्यक्ष इन विवो डिलीवरी (direct in vivo delivery) के लिए एडेनो-एसोसिएटेड वायरस-9 (AAV-9) वेक्टर प्लेटफॉर्म का उपयोग करने वाली पहली भारतीय जीन थेरेपी में से एक है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (b)

- **कथन 1 – गलत:** BIRSA-101 एक विशेष जीन उत्परिवर्तन को लक्षित करता है जो **नाभिकीय जीन (nuclear gene mutations)** में होता है, न कि माइटोकॉन्ड्रियल उत्परिवर्तन में।
- **कथन 2 – सही:** BIRSA-101 को **अल्ट्रा-दुर्लभ रोगों** के लिए डिज़ाइन किए गए भारत के **त्वरित जीनोमिक थेरेपी अनुमोदन ढांचा (Accelerated Genomic Therapy Approval Framework)** के तहत अनुमोदन के लिए विचार किया गया है।
- **कथन 3 – सही:** यह **AAV-9 वेक्टर** प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है, जो अपनी केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में वितरित करने की क्षमता के लिए जाना जाता है, और यह इन विवो डिलीवरी के लिए उपयोग की जाने वाली पहली भारतीय जीन थेरेपी में से एक है।

→ दो कथन (2 और 3) सही हैं।

4. कोडईकनाल सौर वेधशाला (KoSOS)

प्रश्न: कोडईकनाल सौर वेधशाला (KoSOS) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. KoSO के पास दुनिया का **सबसे लंबे समय तक चलने वाला सनस्पॉट ड्राइंग संग्रह** है और यह एक सदी से अधिक की सौर चुंबकीय गतिविधि के पुनर्निर्माण में सहायक है।
2. यह अंतरिक्ष-मौसम वास्तविक समय पूर्वानुमान प्रणाली में एक **पूर्ण-डिस्क H-अल्फा इमेजिंग सुविधा** को एकीकृत करने वाली भारत की **पहली** वेधशाला है।
3. KoSO की डिजिटलीकरण परियोजना **Ca-II K प्लेटों** के ऐतिहासिक अंशांकन (calibration) की अनुमति देती है, जिससे दीर्घकालिक जलवायु और सौर विकिरण सहसंबंध अध्ययन सक्षम होते हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन **सही** हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (c)

- **कथन 1 – सही:** KoSO (स्थापना 1899) के पास 1904 से **लगातार सनस्पॉट रिकॉर्ड** और ड्राइंग का एक संग्रह है, जो इसे वैश्विक स्तर पर सबसे लंबे समय तक चलने वाले अभिलेखागारों में से एक बनाता है।

- **कथन 2 – सही:** K₂SO ने हाल ही में अपनी H-अल्फा पूर्ण-डिस्क इमेजिंग क्षमता को भारत की उभरती अंतरिक्ष-मौसम पूर्वानुमान प्रणालियों के साथ एकीकृत किया है, जो इसे इस सुविधा को एकीकृत करने वाली देश की पहली वेधशालाओं में से एक बनाती है।
- **कथन 3 – सही:** Ca-II K प्लेटों का डिजिटलीकरण सूर्य के वर्णमंडल (chromosphere) के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिसका उपयोग लंबी अवधि में सौर विकिरण (solar irradiance) और पृथ्वी के जलवायु पैटर्न के बीच संबंधों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

→ सभी तीन कथन सही हैं।

5. संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रमुख गैर-नाटो सहयोगी (MNNA) पदनाम

प्रश्न: संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रमुख गैर-नाटो सहयोगी (Major Non-NATO Ally - MNNA) पदनाम के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. MNNA दर्जा संयुक्त राज्य अमेरिका और नामित देश के बीच एक पारस्परिक रक्षा संधि की गारंटी देता है।
2. MNNA राष्ट्र अतिरिक्त अमेरिकी रक्षा वस्तुओं की प्राथमिकता डिलीवरी और सहकारी रक्षा अनुसंधान में भागीदारी के लिए पात्र हैं।
3. अमेरिकी राष्ट्रपति कांग्रेसी अनुमोदन की आवश्यकता के बिना MNNA दर्जा रद्द कर सकते हैं।
4. ताइवान को संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा एक विशेष विधायी श्रेणी के तहत MNNA के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (c)

- **कथन 1 – गलत:** MNNA दर्जा केवल एक सुरक्षा सहयोग वर्गीकरण है; इसमें पारस्परिक रक्षा संधि शामिल नहीं है (जो नाटो सदस्यों को प्राप्त है)।
- **कथन 2 – सही:** MNNA देशों को रक्षा उपकरणों की खरीद, ऋण कार्यक्रमों और संयुक्त अनुसंधान एवं विकास (R&D) में तरजीही उपचार मिलता है।
- **कथन 3 – सही:** अमेरिकी राष्ट्रपति रक्षा सचिव के परामर्श से MNNA पदनाम एकतरफा रूप से प्रदान या रद्द कर सकते हैं।
- **कथन 4 – सही:** ताइवान संबंध अधिनियम के तहत, ताइवान को विधायी रूप से MNNA के समतुल्य उपचार प्राप्त है, हालांकि तकनीकी रूप से इसे औपचारिक रूप से नामित नहीं किया गया है।

→ तीन कथन (2, 3 और 4) सही हैं।

6. रतनमहल वन्यजीव अभयारण्य

प्रश्न: हाल ही में खबरों में रहा रतनमहल वन्यजीव अभयारण्य निम्नलिखित में से किस राज्यों की सीमा के पास स्थित है?

- (a) गुजरात-राजस्थान
- (b) गुजरात-मध्य प्रदेश
- (c) गुजरात-महाराष्ट्र
- (d) गुजरात-गोवा

उत्तर और स्पष्टीकरण

उत्तर: (b)

रतनमहल वन्यजीव अभयारण्य गुजरात राज्य के दाहोद जिले में स्थित है। यह अभयारण्य सीधे मध्य प्रदेश राज्य की सीमा से सटा हुआ है। यह अभयारण्य आलसी भालू (Sloth Bear) की आबादी के लिए जाना जाता है और भील जनजाति के पारंपरिक क्षेत्रों में पड़ता है।

→ यह गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा के पास स्थित है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

जीएस-1 (आधुनिक भारतीय इतिहास / संस्कृति)

Q1. आधुनिक भारतीय साहित्य के प्रमुख रुझान

प्रश्न: "आधुनिक भारतीय साहित्य उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद, पहचान और आधुनिकता की शक्तियों के साथ तालमेल बिठाते हुए विकसित होती सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताओं को दर्शाता है।" 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से वर्तमान तक आधुनिक भारतीय साहित्य के प्रमुख रुझानों का विश्लेषण करें।

नमूना उत्तर:

आधुनिक भारतीय साहित्य, जिसका उदय 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महत्वपूर्ण रूप से हुआ, भारत के जटिल सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का दर्पण है।

प्रमुख रुझान और चरण

1. प्रारंभिक जागरण और औपनिवेशिक आधुनिकता (Late 19th Century)

- **प्रिंट संस्कृति का प्रभाव:** औपनिवेशिक आधुनिकता ने मुद्रण संस्कृति, आधुनिक शिक्षा और उपन्यास, लघु कहानी और आधुनिक नाटक जैसे नए साहित्यिक रूपों का परिचय दिया।
- **शुरुआती राष्ट्रवादी अभिव्यक्ति:** इस काल में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और फकीर मोहन सेनापति जैसे लेखकों ने शुरुआती राष्ट्रवादी आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए गद्य (Prose) के साथ प्रयोग किया।
- **जातिवाद और अंधविश्वास पर प्रहार:** साहित्य ने सामाजिक बुराइयों पर सवाल उठाना शुरू किया, जिससे सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों को आधार मिला।

2. राष्ट्रवादी और सुधारवादी साहित्य (Early 20th Century)

- **राजनीतिक चेतना का उपकरण:** साहित्य राजनीतिक जागृति और स्वतंत्रता संग्राम का एक शक्तिशाली उपकरण बन गया।
 - **उदाहरण:** रवींद्रनाथ टैगोर के मानवतावादी लेखन, सुब्रमण्य भारती की देशभक्ति कविताएँ, प्रेमचंद का यथार्थवाद (दलितों और किसानों पर ध्यान), और मुहम्मद इकबाल की दार्शनिक कविताएँ।
- **सामाजिक न्याय पर केंद्रित विषय:** जातिगत उत्पीड़न, विधवापन, महिला शिक्षा और सामाजिक न्याय जैसे सुधारवादी विषय केंद्रीय बन गए, जो व्यापक सामाजिक आंदोलनों को दर्शाते हैं।

3. विभाजन और यथार्थवाद (Post-Independence Era)

- **विभाजन का आघात:** स्वतंत्रता के बाद साहित्य ने विभाजन के आघात (जैसे, सआदत हसन मंटो, भीष्म साहनी, अमृता प्रीतम) और विकास की अंतर्विरोधी समस्याओं की जाँच की।
- **प्रगतिशील लेखक आंदोलन:** प्रगतिशील लेखक आंदोलन और IPTA (इंडियन पीपल्स थिएटर एसोसिएशन) ने वर्ग संघर्ष, साम्राज्यवाद-विरोध और समानतावाद के विषयों को आगे बढ़ाया।
- **ग्रामीण और अस्तित्ववादी संकट:** लेखकों ने ग्रामीण संकट, गरीबी और नए राष्ट्र की टूटी हुई आशाओं पर ध्यान केंद्रित किया।

4. हाशिए की आवाज़ें और उपेक्षितों का विमर्श (1960s-80s)

- **उप-वैकल्पिक विमर्श:** यह काल दलित साहित्य (जैसे, ओमप्रकाश वाल्मीकि), नारीवादी लेखन (जैसे, इस्मत चुगताई, महाश्वेता देवी), और क्षेत्रीय पहचान साहित्य (जैसे, असमिया और मणिपुरी आधुनिकतावादी) के उदय का साक्ष्य बना।
- **वर्चस्वशाली आख्यानो का विघटन:** इन कार्यों ने जाति, लिंग, आदिवासी अधिकार और सामाजिक-आर्थिक अभाव को सामने लाकर भारतीय साहित्यिक चेतना को नया रूप दिया।

5. समकालीन साहित्य और भूमंडलीकरण (Contemporary Times)

- **नई विषयवस्तु:** समकालीन भारतीय साहित्य भूमंडलीकरण, प्रवासन, शहरी अलगाव, पहचान की राजनीति और तकनीकी आधुनिकता को दर्शाता है।
- **भारतीय अंग्रेजी लेखन का विस्तार:** सलमान रुश्दी, अमिताभ घोष, अरुंधति रॉय जैसे लेखकों द्वारा भारतीय अंग्रेजी लेखन ने विषयों का विस्तार किया और वैश्विक पाठक संख्या बढ़ाई।
- **डिजिटल और क्षेत्रीय पुनरुद्धार:** डिजिटल प्लेटफार्मों और क्षेत्रीय भाषा पुनरुद्धार आंदोलनों ने साहित्य का लोकतंत्रीकरण किया है, जिससे नई और युवा आवाज़ें सामने आई हैं।

निष्कर्षतः, आधुनिक भारतीय साहित्य एक अखंड इकाई नहीं, बल्कि विकसित होते रुझानों का एक **जटिल मोज़ेक** है—जो प्रतिरोध, सुधार, पुनर्निर्माण, और पहचान के मुखर होने में निहित है—जो भारत के बहु-स्तरीय सामाजिक विकास को प्रतिबिंबित करता है।

जीएस-2 (शासन व्यवस्था)

Q2. समकालीन भारत में शासन के मॉडल

प्रश्न: सुशासन ऐतिहासिक अनुभवों, राजनीतिक संस्कृति, संस्थागत डिजाइन और विकसित होती सामाजिक अपेक्षाओं द्वारा आकार लेता है। समकालीन भारत के संदर्भ में शासन के अर्थ, रूपों और प्रमुख मॉडलों पर चर्चा करें।

नमूना उत्तर:

शासन (Governance) उन प्रक्रियाओं, संरचनाओं और मानदंडों को संदर्भित करता है जिनके माध्यम से अधिकार का प्रयोग किया जाता है और सार्वजनिक मामलों का प्रबंधन किया जाता है। सरकार (Government) औपचारिक संस्थानों को दर्शाती है, जबकि शासन में **राज्य, बाजार और नागरिक समाज** के बीच की बातचीत शामिल होती है।

शासन का अर्थ और सिद्धांत

समकालीन भारत में शासन के अर्थ में निम्नलिखित सिद्धांत शामिल हैं:

- **जवाबदेही (Accountability):** अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराना।
- **पारदर्शिता (Transparency):** प्रक्रियाओं और निर्णयों में खुलापन।
- **समावेशिता (Inclusiveness):** यह सुनिश्चित करना कि सभी वर्गों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल किया जाए।
- **कानून का शासन (Rule of Law):** निष्पक्ष और समान कानूनी ढांचा।

- **कुशलता (Efficiency):** संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना।
- **नागरिक भागीदारी और प्रतिक्रियाशीलता (Responsiveness):** ये सिद्धांत **द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (2nd ARC)** और **सतत विकास लक्ष्य-16** में विशेष रूप से रेखांकित किए गए हैं।

शासन के प्रमुख रूप (Forms of Governance)

शासन कई रूपों में व्यक्त होता है, जो भारत के बहु-क्षेत्रीय प्रशासन को दर्शाते हैं:

- **राजनीतिक शासन (Political Governance):** लोकतांत्रिक संस्थानों, चुनावी प्रक्रियाओं, विधायी निरीक्षण और राजनीतिक जवाबदेही का कार्य।
- **आर्थिक शासन (Economic Governance):** बाजारों का विनियमन, राजकोषीय प्रबंधन, वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता, और आर्थिक स्वतंत्रता को सक्षम करना।
- **प्रशासनिक शासन (Administrative Governance):** नीति कार्यान्वयन, सेवा वितरण प्रणाली, ई-गवर्नेंस, और नौकरशाही नैतिकता।
- **सामाजिक शासन (Social Governance):** अधिकारों का संरक्षण, कल्याणकारी योजनाएँ, सामाजिक न्याय, और समावेशी विकास।
- **पर्यावरण शासन (Environmental Governance):** सतत संसाधन प्रबंधन, जलवायु कार्रवाई, और नियामक प्रवर्तन।

शासन के प्रमुख मॉडल (Major Models)

भारत ने जटिल चुनौतियों का समाधान करने के लिए कई शासन मॉडल अपनाए हैं, जो समय के साथ विकसित हुए हैं:

| मॉडल का नाम | मुख्य सिद्धांत | भारतीय संदर्भ में उदाहरण |

| वेबेरियन नौकरशाही मॉडल | पदानुक्रम, नियम-बद्ध कार्यप्रणाली, और तटस्थता। | शास्त्रीय सिविल सेवा, प्रशासन में स्थिरता प्रदान करना। |

| नया सार्वजनिक प्रशासन (NPA) | सामाजिक इक्विटी, नागरिक-केंद्रित प्रशासन, और कल्याण-उन्मुख नीतियाँ। | सकारात्मक कार्रवाई (Affirmative Action), अधिकार-आधारित कानून (जैसे RTI, MGNREGA)। |

| नया सार्वजनिक प्रबंधन (NPM) | दक्षता, प्रतिस्पर्धा, प्रदर्शन माप, और निजी क्षेत्र की भागीदारी। | पीपीपी (PPPs), आउटसोर्सिंग, और प्रदर्शन-आधारित बजटिंग। |

| नेटवर्क शासन मॉडल | गैर सरकारी संगठनों, सामुदायिक संगठनों, निजी फर्मों, और स्थानीय निकायों को शामिल करते हुए सहयोगी शासन। | स्वयं सहायता समूह (SHG) आंदोलन, CSR भागीदारी, सहभागी नियोजन। |

| डिजिटल शासन / GovTech | पारदर्शिता बढ़ाने और विवेक को कम करने के लिए ICT प्लेटफार्मों का उपयोग। | आधार, UMANG, डिजिलॉकर, JAM ट्रिनिटी। |

निष्कर्षतः, भारत में शासन एक **संकर (Hybrid)**, **बहु-अभिनेता पारिस्थितिकी तंत्र** है, जो बदलती सार्वजनिक अपेक्षाओं और विकासात्मक अनिवार्यताओं को पूरा करने के लिए लगातार विकसित हो रहा है।

जीएस-3 (अर्थव्यवस्था / बुनियादी ढांचा)

Q3. सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) और इसकी चुनौतियाँ

प्रश्न: सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल भारत में बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण और सेवा वितरण के लिए एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में विकसित हुए हैं, फिर भी वे संरचनात्मक चुनौतियों से ग्रस्त हैं। प्रमुख PPP मॉडलों पर चर्चा करें और उनकी प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले मुद्दों का **आलोचनात्मक विश्लेषण** करें। (300+ शब्द)

नमूना उत्तर:

सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPPs) सहयोगी व्यवस्थाएँ हैं जहाँ सार्वजनिक और निजी क्षेत्र बुनियादी ढांचे या सार्वजनिक सेवाओं को वितरित करने के लिए संसाधनों, जिम्मेदारियों, जोखिमों और पुरस्कारों को साझा करते हैं। भारत में, PPPs ने **2004 की राष्ट्रीय PPP नीति** के साथ प्रमुखता प्राप्त की है और राजमार्गों, हवाई अड्डों, शहरी सेवाओं, ऊर्जा और रसद सहित कई क्षेत्रों में विस्तार किया है।

प्रमुख PPP मॉडल

PPPs विभिन्न संविदात्मक रूपों में मौजूद हैं, जो जोखिम आवंटन के अनुसार भिन्न होते हैं:

1. BOT (बनाओ-संचालित करो-हस्तांतरित करो - Build-Operate-Transfer):

- निजी डेवलपर बुनियादी ढाँचा बनाता है, रियायत अवधि के लिए इसका संचालन करता है, और फिर इसे सरकार को **हस्तांतरित** कर देता है।
- **BOT-टोल:** डेवलपर सीधे टोल एकत्र करता है (उदाहरण: NHDP चरण-I और II)।
- **BOT-एन्युइटी:** सरकार यातायात जोखिम की परवाह किए बिना **वार्षिकी (annuities)** का भुगतान करती है।

2. HAM (हाइब्रिड एन्युइटी मॉडल - Hybrid Annuity Model):

- BOT विफलताओं को ठीक करने के लिए पेश किया गया। सरकार **40% अग्रिम** प्रदान करती है, निजी क्षेत्र 60% निवेश करता है। **यातायात जोखिम सरकार के पास रहता है।** HAM ने रुकी हुई राजमार्ग परियोजनाओं को पुनर्जीवित किया।

3. OMDA मॉडल (हवाई अड्डे):

- दिल्ली और मुंबई हवाई अड्डों में उपयोग किया जाता है; निजी रियायतकर्ता AAI को **राजस्व का हिस्सा** भुगतान करता है।

4. BOOT, BOO, DBFOT मॉडल:

- अन्य प्रकार जो निर्माण, स्वामित्व और संचालन को विभिन्न पक्षों के बीच आवंटित करते हैं।

प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले संरचनात्मक मुद्दे (आलोचनात्मक विश्लेषण)

PPPs, हालांकि आवश्यक हैं, निम्नलिखित प्रणालीगत चुनौतियों का सामना करते हैं जो उनकी प्रभावशीलता को गंभीर रूप से सीमित करती हैं:

- **अत्यधिक उत्तोलन और वित्तीय तनाव (Over-leveraging & Financial Stress):** कई निजी कंपनियों ने आक्रामक बोली लगाई लेकिन अवास्तविक राजस्व अनुमानों और व्यापक आर्थिक झटकों के कारण राजस्व की कमी का सामना किया, जिससे परियोजनाएँ फँस गईं।
- **जोखिम आवंटन के मुद्दे (Risk Allocation Issues):** सर्वोत्तम अभ्यास के लिए आवश्यक है कि जोखिम उस पक्ष को आवंटित किया जाए जो इसे सबसे अच्छी तरह से प्रबंधित करने में सक्षम हो। हालांकि, भारतीय PPPs अक्सर **अत्यधिक जोखिम निजी खिलाड़ियों** को हस्तांतरित करते हैं (जैसे, भूमि अधिग्रहण में देरी का जोखिम)।
- **नियामक अनिश्चितता और देरी: नीतिगत परिवर्तन, भूमि अधिग्रहण में देरी और मुकदमेबाजी** अनुपालन और वित्तीय व्यवहार्यता को प्रभावित करते हैं।
- **अनुबंधीय कठोरता (Contract Rigidity):** दीर्घकालिक PPPs को लचीले **पुनर्गोष्ठी (renegotiation)** ढांचे की आवश्यकता होती है। एक मजबूत कानूनी वास्तुकला की अनुपस्थिति अनुकूलन क्षमता को सीमित करती है।
- **कार्यान्वयन एजेंसियों की कम क्षमता:** कई राज्य निकायों में जटिल रियायत समझौतों का मसौदा तैयार करने की विशेषज्ञता की कमी है, जिससे विवाद होते हैं।
- **कमजोर विवाद समाधान (Weak Dispute Resolution):** मध्यस्थता में देरी, भुगतान की अड़चनें और खराब अनुबंध प्रवर्तन निजी भागीदारी को हतोत्साहित करते हैं।
- **सार्वजनिक जवाबदेही में कमी:** निजीकरण के कारण अक्सर **सेवा गुणवत्ता और शुल्क निर्धारण** पर सार्वजनिक निरीक्षण कम हो जाता है।

आगे का मार्ग: PPPs को मजबूत करने के लिए, भारत को एक **PPP विधान**, बेहतर जोखिम-साझेदारी, **व्यवहार्यता अंतराल वित्तपोषण (VGF)** में सुधार, मजबूत नियामक स्वायत्तता और क्षमता-निर्माण की आवश्यकता है। **केळकर समिति** की सिफारिशें भविष्य के PPP सुधारों के लिए महत्वपूर्ण बनी हुई हैं।

जीएस-4 (नीतिशास्त्र)

Q4. नैतिक शासन और सार्वजनिक-सेवा मूल्य

प्रश्न: "नैतिक शासन के लिए न केवल नियमों का अनुपालन, बल्कि **सार्वजनिक-सेवा मूल्यों** की खेती की भी आवश्यकता होती है जो नागरिकों और राज्य के बीच **विश्वास** को मजबूत करते हैं।" लोक प्रशासन में नैतिक मुद्दों के संदर्भ में इस कथन की जाँच करें।

नमूना उत्तर:

नैतिक शासन एक वैध और प्रभावी लोक प्रशासन की नींव है। जबकि नियम, कानून और विनियम जवाबदेही के लिए एक ढांचा प्रदान करते हैं, नैतिक शासन **अनुपालन से परे** जाता है और **अखंडता, निष्पक्षता और सार्वजनिक-सेवा मूल्यों** के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की मांग करता है।

नियमों से परे मूल्यों की आवश्यकता

लोक प्रशासन अधिकार और विवेक के चौराहे पर कार्य करता है। प्रशासकों को अक्सर ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जहाँ नियम अपर्याप्त या अस्पष्ट हो सकते हैं। ऐसे मामलों में, नैतिक मूल्य निर्णय लेने का मार्गदर्शन करते हैं:

- **अखंडता (Integrity):** निर्णय लेने में व्यक्तिगत लाभ की अनुपस्थिति।
- **निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता (Fairness and Objectivity):** बिना किसी पक्षपात के सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार करना।
- **करुणा और सहानुभूति (Compassion and Empathy):** उदाहरण के लिए, कल्याणकारी योजनाओं से निपटते समय एक लोक सेवक को **प्रक्रियात्मक कठोरता को कमजोर लाभार्थियों के लिए सहानुभूति के साथ संतुलित करना चाहिए।**
- **सार्वजनिक हित (Public Interest):** हमेशा सार्वजनिक भलाई को व्यक्तिगत या राजनीतिक हित से ऊपर रखना।

इन मूल्यों की कमी **नागरिकों और राज्य के बीच विश्वास** को कमजोर करती है। नैतिक विफलताएँ—जैसे **कल्याणकारी योजनाओं में रिसाव, पक्षपाती पुलिसिंग, या अपारदर्शी नियामक प्रक्रियाएँ**—नीति की वैधता को कम कर सकती हैं।

नैतिक मुद्दों को मजबूत करने वाले तंत्र

आधुनिक प्रशासन के लिए प्रतिक्रियाशीलता, नागरिक-केंद्रितता, सामाजिक इकिवटी और विविधता के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों की आवश्यकता है। इन मूल्यों को संस्थागत बनाने के लिए निम्नलिखित तंत्र महत्वपूर्ण हैं:

- **पारदर्शिता और जवाबदेही उपकरण:** सेवोत्तम, नागरिक चार्टर, आरटीआई अधिनियम, और ई-गवर्नेंस मानव विवेक को कम करके और पारदर्शिता बढ़ाकर नैतिक जवाबदेही को मजबूत करते हैं।
- **संस्थागत रक्षा उपाय:** आचार संहिता (Code of conduct), नैतिकता संहिता (Code of ethics), लोकपाल, सतर्कता आयोग, सामाजिक लेखा परीक्षा, और व्हिसलब्लोअर संरक्षण नैतिक व्यवहार को सुदृढ़ करते हैं।
- **आंतरिक नैतिक कम्पास (Internal Moral Compass):** अंततः नैतिक शासन लोक सेवकों के आंतरिक नैतिक चरित्र पर निर्भर करता है। मूल्य-आधारित सार्वजनिक सेवा, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यावहारिक नैतिकता पर प्रशिक्षण (जैसे LBSNAA में) सुनिश्चित करता है कि प्रशासक नैतिक मानकों को आत्मसात करें।

निष्कर्षतः, नैतिक शासन संस्थागत सुरक्षा उपायों और व्यक्तिगत गुणों का एक संयोजन है। शासन की सच्ची अखंडता तब उभरती है जब सिविल सेवक केवल नियमों के प्रति दायित्व से नहीं, बल्कि सार्वजनिक भलाई के लिए एक आंतरिक प्रतिबद्धता से कार्य करते हैं, जिससे नागरिकों का विश्वास मजबूत होता है।

समसामयिक घटनाएँ

Q5. न्यायाधिकरण सुधार अधिनियम, 2021 पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

प्रश्न: सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में न्यायाधिकरण सुधार अधिनियम, 2021 के प्रमुख प्रावधानों को असंवैधानिक बताते हुए रद्द कर दिया। इसमें शामिल संवैधानिक सिद्धांतों की जाँच करें और भारत की न्यायाधिकरण प्रणाली के लिए इसके निहितार्थों पर चर्चा करें।

नमूना उत्तर:

सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधिकरण सुधार अधिनियम, 2021 के प्रमुख प्रावधानों को रद्द करने का निर्णय भारत की प्रशासनिक न्याय प्रणाली में एक महत्वपूर्ण विकास है। न्यायालय ने माना कि अधिनियम के कई खंड न्यायिक स्वतंत्रता, मूल संरचना के सिद्धांतों का उल्लंघन करते हैं, और बार-बार दिए गए पूर्व निर्देशों को दोहराते हैं, जिससे शक्तियों के पृथक्करण को कम आंका जाता है।

शामिल संवैधानिक सिद्धांत

न्यायालय का निर्णय मुख्य रूप से शक्तियों के पृथक्करण (Separation of Powers) और न्यायिक स्वतंत्रता (Judicial Independence) के सिद्धांतों पर आधारित था:

1. कार्यकाल की अवधि (Tenure):

- न्यायालय ने न्यायाधिकरण सदस्यों के लिए चार साल के कार्यकाल के विवादास्पद प्रावधान को रद्द कर दिया।
- न्यायालय ने अपने पहले के निर्णयों (मद्रास बार एसोसिएशन मामले) की पुष्टि की जिसमें न्यूनतम पाँच वर्ष (अधिमानत: उच्च) के कार्यकाल की आवश्यकता थी। एक छोटा कार्यकाल असुरक्षा पैदा करता है और संभावित कार्यकारी प्रभाव को अनुमति देता है।

2. न्यायिक प्रधानता का उल्लंघन:

- अधिनियम में एक प्रावधान था जो सरकार को चयन समिति द्वारा भेजे गए उम्मीदवारों की संक्षिप्त सूची (shortlist) से सदस्यों को नियुक्त करने की अनुमति देता था। न्यायालय ने जोर दिया कि सरकार को केवल अनुशंसित सूची में से ही उम्मीदवारों को नियुक्त करना चाहिए, जिससे नियुक्तियों में कार्यकारी हस्तक्षेप को रोका जा सके।

3. योग्यता मानदंड (Age Criteria):

- अधिनियम में एक प्रावधान को भी रद्द कर दिया गया, जिसके लिए अधिवक्ताओं को 25 वर्ष का न्यूनतम अनुभव होना आवश्यक था। न्यायालय ने माना कि यह प्रावधान सक्षम अधिवक्ताओं को अकारण प्रतिबंधित करता है और अनुच्छेद 14 के तहत समानता का उल्लंघन करता है।

न्यायाधिकरण प्रणाली के लिए निहितार्थ

यह निर्णय न्यायाधिकरण प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखता है:

- **न्यायिक स्वतंत्रता को सुदृढ़ करना:** यह न्यायाधिकरण के कामकाज पर न्यायिक निरीक्षण को मजबूत करता है और सुनिश्चित करता है कि नियुक्तियों पर कार्यपालिका का प्रभुत्व न हो।
- **सरकार पर पुनर्कार्य का दबाव:** यह निर्णय सरकार को संवैधानिक सिद्धांतों के अनुरूप होने के लिए न्यायाधिकरण सुधार अधिनियम को फिर से तैयार करने के लिए मजबूर करता है।
- **नागरिकों के अधिकार का संरक्षण:** यह मुकदमेबाजों के निष्पक्ष न्यायनिर्णयन (fair adjudication) के अधिकार की रक्षा करता है, खासकर कराधान, कॉर्पोरेट कानून और पर्यावरण विनियमन जैसे विशेष क्षेत्रों में।
- **मूल संरचना सिद्धांत की पुनःपुष्टि:** यह निर्णय इस सिद्धांत की पुनः पुष्टि करता है कि चूंकि न्यायाधिकरण कई मामलों में उच्च न्यायालयों की जगह लेते हैं, इसलिए उन्हें स्वतंत्रता, स्वायत्तता और सेवा शर्तों की सुरक्षा बनाए रखनी चाहिए।

UNION TERRITORIES MAP OF INDIA

भारत के केंद्र शासित प्रदेशों के मानचित्र

A union territory is a type of administrative division in the Republic of India. Unlike the states of India, which have their own governments, union territories are federal territories governed, in part or in whole, by the Union Government of India.

CHANDIGARH

UNION TERRITORY OF INDIA

CAPITAL
Chandigarh



POPULATION - 2024
12.49 Lac. ▲

DISTRICT
1

MAJOR CITIES
5

ELEVATION
321 m (1,053 ft)

AREA
**114 km²
(44 sq mi)**

REGION
Northern India

BIRD
Indian grey hornbill

ABOUT



Chandigarh, the capital of the northern Indian states of Punjab and Haryana, was designed by the Swiss-French modernist architect, Le Corbusier. His buildings include the Capital Complex with its High Court, Secretariat and Legislative Assembly, as well as the giant Open Hand Monument. The nearby Rock Garden is a park featuring sculptures made of stones, recycled ceramics and industrial relics.

PRODUCTION

The main food grain crop is wheat and it is sown nearly in 600 hectares & fodder is sown nearly in 1250 hectares (Kharif, Rabi and summer crops).

FAMOUS TOURIST PLACES

Sukhna Lake, Rock Garden, Government Museum and Art Gallery are major tourist attractions of Chandigarh. ISKCON Temple Chandigarh, Chandigarh Rose Garden, Mahendra Chaudhary Zoological Park, Elante mall.

चुनौतियाँ: चुनौतियों में न्यायाधिकरणों में निरंतर रिक्तियों के कारण न्याय वितरण का धीमा होना, प्रायोजक मंत्रालयों द्वारा प्रशासनिक नियंत्रण का बने रहना, और न्यायाधिकरणों में एकरूपता की कमी शामिल हैं।

बहरहाल, यह निर्णय इस बात की पुष्टि करने में एक महत्वपूर्ण कदम है कि न्यायाधिकरणों को स्वतंत्र न्यायिक निकायों के रूप में कार्य करना चाहिए, जिससे संविधान की मूल संरचना की रक्षा हो सके।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver